धान की उन्नत खेती का तरीका

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 70–71

धान की उन्नत खेती का तरीका

शुभम गंगवार, अंकित तिवारी, सौरभ सिंह एवं राजीव रंजन पटेल
बाँदा कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय बाँदा २१०००१ उ.प्र, भारत।
Email Id: horticultureshubham@gmail.com

धान भारत की मुख्य फसल है. मुख्यतौर पर ये मॉनसून की खेती है, लेकिन कई राज्यों में धान की खेती सीजन में दो बार होता है। भारत धान की जन्म–स्थली मानी गई है. यह भारत सहित एशिया एवं विश्व के बहुत से देशों का मुख्य भोजन है। विश्व में मक्का के बाद सबसे अधिक उत्पन्न होने वाला अनाज धान ही है, यह भारत की सबसे अधिक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। चावल में पाया जाने वाला मांड में अधिक मात्रा में स्टार्च पाया जाता है, जो कपड़े उद्योग में अधिक प्रयोग होता है।

धान का जो भूसा होता है, उसे मुर्गी पालन के बीछावन में प्रयोग किया जाता है। धान के अवशेष से तेल निकाला जाता है, जो खाने में प्रयोग किया जाता है। चावल एक पोषण प्रधान भोजन है, जो तत्काल ऊर्जा प्रदान करता है, क्योंकि इसका सबसे महत्वपूर्ण घटक कार्बोहाइड्रेट (स्टार्च) है।

जलवायु

यह उष्ण तथा उपोष्ण जलवायु की फसल है। इस फसल की पैदावार के लिए अधिक तापमान, अधिक आद्रता, अधिक वर्षा अच्छी होती है। इस फसल की खेती 100 सेंटीमीटर से 250 सेंटीमीटर वर्षा वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जाती है।

भूमि

उचित जल निकास वाली भारी दोमट मिट्टी इस फसल की खेती के लिए उपर्युक्त मानी गई है। इस फसल के लिए अधिक जल धारण क्षमता वाली भूमि की आवश्यकता पड़ती है। धान की फसल के लिए पीएच 4.5 से 8.0 तक उपयुक्त रहता है।

धान की उन्नत किस्में

असिंचित दशा

नरेन्द्र–118, नरेन्द्र–97, साकेत–4, बरानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमनी।

सिंचित दशा

सिंचित क्षेत्रों के लिए जल्दी पकने वाली किस्मों में पूसा–169, नरेन्द्र–80, पंत धान–12, मालवीय धान–3022, नरेन्द्र धान–2065 और मध्यम पकने वाली किस्मों में पंत धान–10, पंत धान–4, सरजू–52, नरेन्द्र–359, नरेन्द्र–2064, नरेन्द्र धान–2064, पूसा–44, पीएनआर–381 प्रमुख किस्में हैं।

ऊसरीली भूमि के लिए

नरेन्द्र ऊसर धान–3, नरेन्द्र धान–5050, नरेन्द्र ऊसर धान–2008, नरेन्द्र ऊसर धान–2009, पूसा–1460।

- पैदावार 50 से 55 किवंटल/हेक्टेयर।
- फसल पकने की अवधि 120 से 125 दिन।

खेत की तैयारी

खेत में फसल कटाई के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से भूमि की अच्छी तरह से जुताई कर देनी चाहिए। पहली बरसात में भूमि की एक जुताई के साथ गोबर की खाद व कम्पोस्ट खाद डालकर अच्छे से जुताई कर देना चाहिए।

बीज की मात्रा

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

छिड़काव विधि 100 से 120 किलोग्राम, पंक्तियों में बुवाई 60 किलोग्राम, हाइब्रिड धान 15 किलोग्राम एस आर आई विधि 5 से 6 किलोग्राम, रोपाण विधि 35 से 50 एवं डेपोग विधि 1.5–3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर।

बीज उपचार

बुवाई के पूर्व बीज का उपचार करना अति आवश्यक होता है. धान की बुवाई के पूर्व बीज उपचार के लिए 10 लीटर पानी में 17% नमक का घोल तैयार करते हैं। इस घोल में धान के बीज को डूबोकर अच्छे से मिलाया जाता है, जिसमें हल्के तथा खराब दाने ऊपर तैरने लगते हैं और स्वस्थ दाने नीचे बैठ जाते हैं, फिर खराब दानों को निकालकर फेक देते हैं और अच्छे दाने को निकालकर स्वच्छ पानी में दो से तीन बार धोने के बाद फिर उसे छांव में सुखा दिया जाता है। थायरम व बाविस्टीन को 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें ट्राइकोडर्मा पाउडर 5 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें। उपचारित बीज को गीले बोरे में लपेटकर ठंडे कमरें में रखें. समय समय पर इस बोरे पर पानी सींचते रहें। लगभग 48 घंटे बाद बोरे को खोलें. बीज अंकुरित होकर नर्सरी डालने के लिए तैयार होते हैं. किसानों को बीज शोधन के प्रति जागरूक होना चाहिए. बीज शोधन करके धान को कई तरह के रोगों से बचाया जा सकता है. किसानों को एक हेक्टेयर धान की रोपाई के लिए बीज शोधन की प्रक्रिया में महज 25–30 रुपये खर्च करने होते हैं।

बुवाई का समय

अगेती फसल मई – जून, वर्षा ऋतु की फसल जून–जुलाई एवं ग्रीष्मकालीन फसल नवंबर – दिसंबर।

खाद एवं उर्वरक

मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग किया जाना चाहिए।

- 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर अच्छी प्रकार से सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद का उपयोग करने से 50 से 60 प्रतिशत रसायनिक खाद में कमी आ जाती है।
- नाइट्रोजन 120, फास्फोरस 60 एवम पोटाश 30 (किग्रा/है0)।
- नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा पलेवा के समय जुताई करके अच्छी तरह से मिला देना चाहिए।
- बाकी बचा नाइट्रोजन को रोपाई के 30 दिन बाद आधी मात्रा उपयोग में लाना चाहिए।
- बची हुई नाइट्रोजन को रोपाई के 60 दिन बाद उपयोग में लाना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

कोनोवीडर की सहायता से खरपतवार में नियंत्रण पाया जा सकता है. नर्सरी जमीन तैयार कर सिंचाई करें व खरपतवार उगे तो नष्ट कर दें।

कतार या रोपा विधि में बुवाई के तीन से चार दिन के अंदर पेंडीमेथालिन एक से डेढ़ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

कटाई व मंडाई

बुवाई के 3 से 5 माह में धान की अलग–अलग किस्में पककर तैयार होती हैं. फसल का रंग पीला, पत्तियों का रंग सुनहरा हो जाए तो कटाई कर लेना चाहिए. मंडाई जापानी थ्रेसर से करते हैं।

उपज

छिड़काव विधि 20 से 25 क्विंटल, धान की देसी किस्म 25 से 30, बौनी उन्नत किस्म 60 से 80 एवम रोपाई की गई फसल 55 से 60 प्रति हेक्टेयर।

भंडारण

धान को धूप में अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए 12 से 13 प्रतिशत नमी होने पर उसे हवा व नमी रहित स्थान में भंडार करके रखें। भंडारित स्थान पर मेलाथियान 50 EC 20 उस को 2 लीटर पानी में तैयार करके छिड़काव करें।

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com